1 प्रार्थना

प्रार्थना प्रभु भक्ति का एक माध्यम है। कवि कल्पना करता है कि प्रभु एक प्रकार का प्रकाश है जो मानव मन को सही राह दिखाता है। मनुष्य को सदा प्रभु में असीम श्रद्धा रखनी चाहिए।

जग-जीवन में जो चिर महान,
सौंदर्य-पूर्ण औ सत्य प्राण,
मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ,
जो हो मानव के हित समान।

जिससे जीवन में मिले शक्ति,
छूटे भय, संशय, अंध-भक्ति,
मैं वह प्रकाश बन सकूँ नाथ,
मिल जाएँ जिसमें अखिल व्यक्ति।

पाकर प्रभु, तुमसे अपार दान,
करने मानव का परित्राण,
ला सकूँ विश्व में एक बार,
फिर से नव-जीवन का विहान।

– सुमित्रानंदन पंत

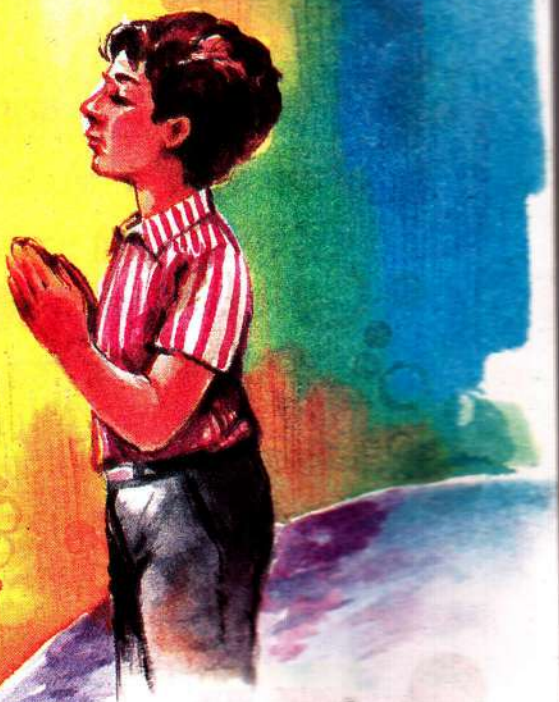

शब्दार्थ

संशय = शंका (Doubt)
हित = कल्याण (Welfare)
नाथ = भगवान (God)
अपार = अत्यधिक (Extreme)
अखिल = सम्पूर्ण (Whole)
अंध-भक्ति = अंध विश्वास (Superstition)
परित्राण = रक्षा (Safety)
विहान = सुबह (Morning)
सौंदर्य-पूर्ण = सुंदरता से भरा हुआ (Full of Beauty)
चिर = हमेशा रहने वाला (Always)

अभ्यास

सोचिए और बताइए

1. कवि ने किसकी प्रार्थना की है ?
2. कवि किसके लिए प्रार्थना कर रहा है ?
3. कवि कौन-सा प्रकाश बनने की प्रार्थना कर रहा है ?
4. कवि एक बार क्या लाना चाहता है ?
5. इस कविता का उद्देश्य बताइए।
6. इस कविता के रचयिता कौन हैं ?

पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है ?

जग-जीवन में जो चिर महान
सौंदर्य-पूर्ण औ सत्य प्राण
मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ,
जो हो मानव के हित समान।

कवि किसका प्रेमी बनना चाहता है ? उस पर सही (✓) का चिह्न लगाइए

(क) देश ( ) (ख) मानव ( ) (ग) ईश्वर ( ) (घ) कोई अन्य ( )

भाव स्पष्ट कीजिए

मानव के हित समान

.....

मानव का परित्राण

.....

नव-जीवन का विहान

.....

शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए

नाथ = ...

संशय = ...

अंध-भक्ति = ...

परित्राण = ...

अपार = ...

पढ़िए, समझिए और लिखिए

(क)

कार्यकर्म	=	कार्यक्रम	मरयादा	=	मर्यादा
ग्रहकार्य	=	.....	मूरख	=	.....
नमश्कार	=	.....	प्रसंषा	=	.....
आर्शिवाद	=	.....	ग्यान	=	.....
परिक्षा	=	.....	अभिशेक	=	.....
पत्नि	=	.....	प्रमात्मा	=	.....

(ख)

देव	+	इन्द्र	=	देवेन्द्र	पुस्तकालय	=	पुस्तक	+ आलय
पूर्ण	+	इन्द्र	=	.....	कृष्णावतार	=	.....	+ .....
हेमा	+	इन्द्र	=	.....	वार्तालाप	=	.....	+ .....
विमल	+	ईश	=	.....	मुनीश्वर	=	.....	+ .....
काला	+	ईश्वर	=	.....	नारीश्वर	=	.....	+ .....
वार्षिक	+	उत्सव	=	.....	महात्मा	=	.....	+ .....

कीजिए

- इस कविता को कंठस्थ कीजिए।
- कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

2 श्रम की प्रतिष्ठा

इस पाठ में श्रम के प्रति आदर का भाव उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है। प्राय: लोग श्रमिकों को हेय दृष्टि से देखतें हैं जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। अनेक दृष्टांतों के माध्यम से श्रम का महत्व स्थापित करने वाला यह पाठ जीवन में अनुकरणीय है।

कहा जाता है – यह पृथ्वी शेषनाग के मस्तक पर स्थित है। अगर शेषनाग का आधार टूट जाए तो पृथ्वी स्थिर नहीं रह सकेगी। हमने सोचा – यह शेषनाग कौन है ?

ध्यान में आया, दिन भर शारीरिक श्रम करने वाले मज़दूर, जो किस्म-किस्म की पैदावार करते हैं, वे शेषनाग हैं। सबका आधार उन मजदूरों पर है। इसलिए भगवान ने मजदूरों को कर्मयोगी कहा है, लेकिन सिर्फ़ कर्म करने से कोई कर्मयोगी नहीं होता। देश में कुछ मज़दूर खेतों पर काम करते हैं, कुछ रेलवे में काम करते हैं, कुछ कारखाने में काम करते हैं। दिन भर मजदूरी करते हैं और अपने पसीने से रोटी कमाते हैं। जो व्यक्ति पसीने से रोटी कमाता है, वह धर्म-पुरुष हो जाता है। उसके जीवन में पाप का आसानी से प्रवेश नहीं हो सकता। दिर भर काम कर लिया तो रात को गहरी नींद आती है। न दिन में पाप-कर्म करने के लिए समय मिलता है, न रात को कुछ सूझ सकता है; क्योंकि थका-माँदा शरीर आराम चाहता है। उसे नींद की जरूरत होती है। जिस जीवन में पाप-चिंतन की गुंजाइश ही न हो, उसे धार्मिक जीवन होना चाहिए। पर ऐसा अनुभव नहीं हो रहा है।

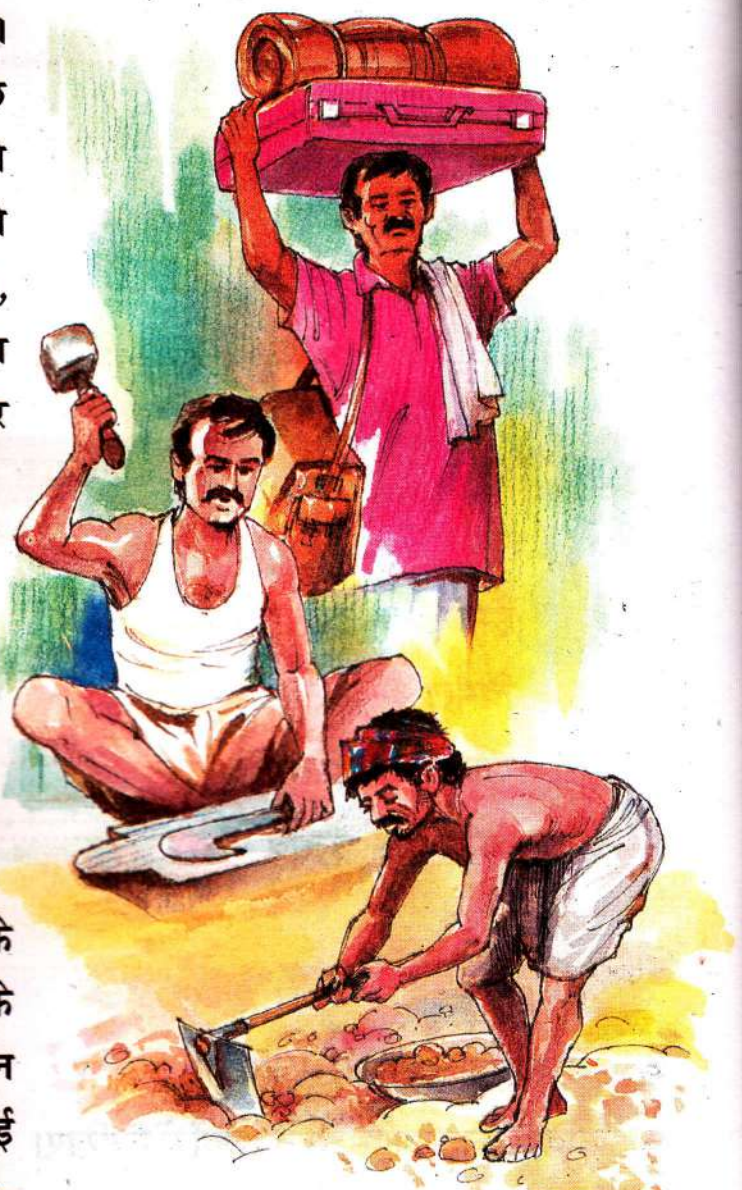

अनुभव तो यह है कि जो काम नहीं करते, उनके जीवन में तो पाप हैं ही, पर उन पापों ने मजदूरों के जीवन में प्रवेश कर लिया है। कई प्रकार के व्यसन उनमें होते हैं। यानी केवल श्रम करने से कोई

कर्मयोगी नहीं होता। हाँ, जो श्रम टालता है, वह तो कर्मयोगी है ही नहीं। उसके जीवन में पाप हैं तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि उसके पास समय फाज़िल पड़ा है। जहाँ समय फाज़िल पड़ा हो, वहाँ शैतान का काम शुरू होता है। इसलिए फुर्सती लोगों के जीवन में पाप दीखता है तो आश्चर्य नहीं। पर मजदूरी करने वाले के जीवन में पाप दीखता है तो सोचना चाहिए कि ऐसा क्यों होता है। ऐसा इसलिए होता है कि वे कर्म को पूजा नहीं समझते। कर्म लाचारी से करना पड़ता है, इसलिए करते हैं। वे अगर काम से मुक्त हो सकें तो बहुत जल्दी राजी हो जाएँगे। सच्चे कर्मयोगी की यह हालत नहीं होती।

आज देहाती लोग भी कहते हैं कि हमारे बच्चों को तालीम मिलनी चाहिए। तालीम किसलिए मिलनी चाहिए ? इसलिए नहीं कि लड़का ज्ञानी बनेगा, धर्म-ग्रंथ पढ़ सकेगा और जीवन में हर एक काम विचारपूर्वक करेगा; अपितु इसलिए कि लड़के को नौकरी मिलेगी और हम जैसे दिन भर खटते हैं; वैसे उसे खटना नहीं पड़ेगा। मजदूर ऐसा सोचते हैं। काम के प्रति ऐसी घृणा मजूदरों में है। काम न करने वालों में तो है ही।

दिमागी काम करने वाले लोग मज़दूरों को नीच समझते हैं। थोड़े से काम लेने के लिए जितनी मज़दूरी देनी पड़ेगी उतनी देंगे, पर ज्यादा-से-ज्यादा काम लेंगे। ऐसी वृत्ति ही बन गई है। इसका अर्थ हुआ कि उन्हें काम से नफ़रत है ही, मज़दूर को भी काम से नफ़रत है। वह मज़दूरी तो करता है पर उसमें उसे गौरव नहीं लगता।

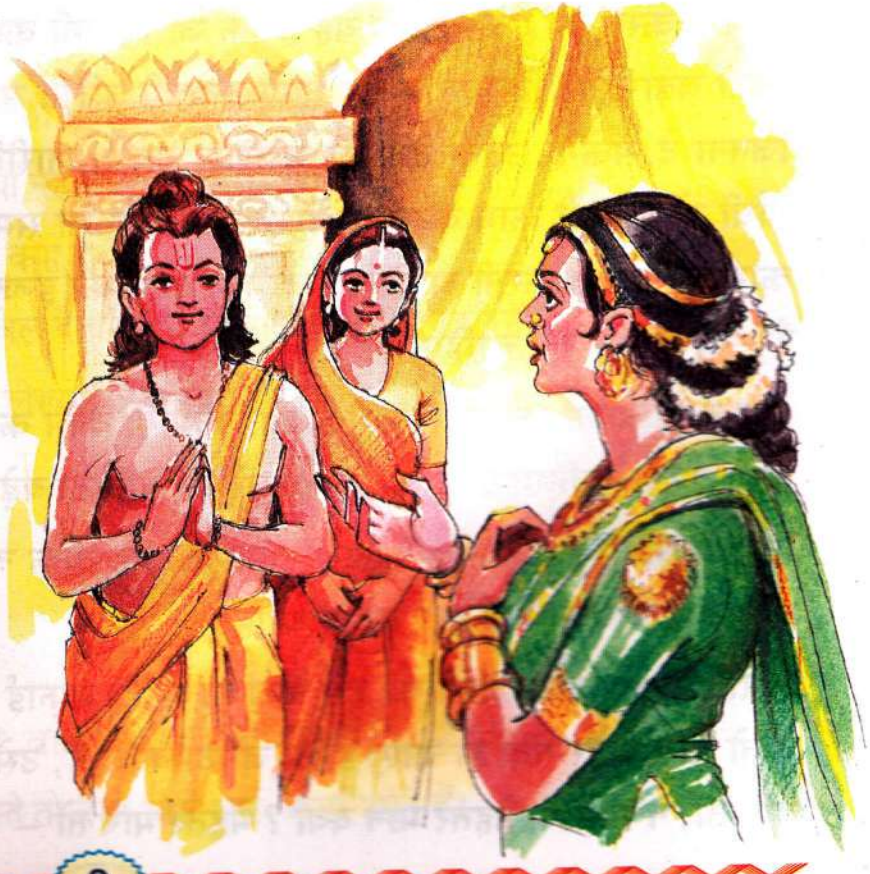

रामायण में भी एक कहानी है। अच्छी है। सुनने लायक है। रामजी का वनवास हुआ तो सीता जी ने कहा – मैं भी जाऊँगी। उसे आदत तो नहीं थी ऐसे जीवन की, पर उसने निश्चय किया था कि जहाँ रामजी, वहाँ मैं। पर जब कौशल्या ने सुना तो कहा, सीता का जाना कैसे होगा ?

मैंने तो उसे दीप की बाती भी जलाने नहीं दी अर्थात् यहाँ भी काम की प्रतिष्ठा मानी नहीं गई। इसमें अच्छाई भी है कि ससुर के घर लड़की गई तो उसे बेटी समान माना, पर मेहनत को हानि माना गया, यह इसमें

दीखता है। धर्मराज ने राजसूय यज्ञ किया था। कृष्ण भी वहाँ गए थे। कहने लगे, मुझे भी काम दो। धर्मराज ने कहा, आपको क्या काम दें। आप तो हमारे लिए पूज्य हैं, आदरणीय हैं, आपके लायक हमारे पास कोई काम नहीं है। भगवान ने कहा, आदरणीय हैं तो क्या नालायक हैं। हम काम कर सकते हैं। तो धर्मराज ने कहा, आप ही काम ढूँढ लीजिए। तो भगवान ने काम लिया, जूठी पत्तलें उठाने का और पोंछा लगाने का।

ज्ञानी तो खा सकते हैं और आशीर्वाद दे सकते हैं; काम नहीं कर सकते। अगर कोई सवेरे उठकर पीसता है तो वह ज्ञानी नहीं, मज़दूर कहलाएगा। ज्ञानी को, योगी को काम नहीं करना चाहिए। बूढ़ों को काम से मुक्त रहना ही चाहिए। बूढ़ों को काम देना निष्ठुरता होगी। यानी बूढ़ा, बच्चा, योगी, ज्ञानी, व्यापारी, वकील, अध्यापक, विद्यार्थी किसी को काम नहीं करना चाहिए। इतना बेकार वर्ग खड़ा हो जाएगा तो बेकारी बढ़ेगी। अगर ऐसा होता कि जो काम नहीं करता, वह खाता भी नहीं, तो ठीक था; पर वह तो अधिक खाने को माँगता है। ऐसी समाज-रचना जहाँ हुई है वहाँ मज़दूर समझते हैं कि हमें काम करने से छुट्टी मिले तो अच्छा होगा।

ऐसा समाज जहाँ लाचारी से काम करता है, तो उसमें कर्मयोगी हो ही नहीं सकते। जो काम टालते हैं, जो काम नहीं करते हैं, उनका जीवन धार्मिक होता ही नहीं। इस कारण अपने समाज में श्रम की प्रतिष्ठा नहीं है।

काम न करने का एक कारण यह है कि जो दिमागी काम करते हैं, उन्होंने दिमागी काम की महत्ता इतनी बढ़ा दी है कि उसे हज़ार रुपए देना ही उचित मानेंगे और श्रम करने वाले को कम-से-कम जितना दे सकेंगे, उतना देने की कोशिश करेंगे। शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा न मानो; पर महात्मा गाँधी तो दिमागी काम करते थे, फिर भी थोड़ा-सा समय निकालकर दिन में सूत कात ही लेते थे। काम की इज्ज़त करनी चाहिए। अगर हम काम की इज्ज़त नहीं करते तो बड़ा भारी धर्म-कार्य खोते हैं – ऐसा समझना चाहिए।

श्रम करने वालों को भी दिमाग है और दिमागी काम करने वालों को भी हाथ दिए हैं, तो दोनों को काम करना चाहिए। दोनों की इज्ज़त बढ़ेगी, प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

दिमागी काम और श्रम के मूल्य में अंतर है, यह ठीक नहीं है। श्रम की प्रतिष्ठा कायम करनी है तो कीमत में अधिक फर्क नहीं करना चाहिए।

शारीरिक श्रम करने वाले को हम नीच मानते हैं। सफ़ाई कर्मचारी को अगर एक दिन की भी छुट्टी दें तो सारा शहर गंदा हो जाए। इतना जो उपकारी है, उसे हम नीच मानते हैं। न उसे इज्ज़त देते हैं, न प्रतिष्ठा, न सम्मान। मेहतर माने क्या ? मेहतर माने तो – महत्तर।

इसलिए दो बातें होनी चाहिए। हर एक को थोड़ा-थोड़ा श्रम करना ही चाहिए। अगर हम बिना काम किए खाते हैं तो हमारा जीवन पापी बनता है। दूसरी चीज़, कामों का मूल्य समान होना चाहिए। जब यह होगा तब श्रम की प्रतिष्ठा होगी।

– विनोबा भावे

शब्दार्थ

मुक्त = स्वतंत्र (Free)
चिंतन = सोच-विचार (Wisdom)
वृत्ति = स्वभाव (Nature)
प्रतिष्ठा = सम्मान (Respect)
फाज़िल = खाली (Empty)
स्थिर = जो हिले-डुले न (Stationary)
तालीम = लिखना-पढ़ना (Education)
फुर्सती = बिन काम के (Idle)
निष्ठुरता = कठोरता, निर्दयता (Cruel)
व्यसन = बुराइयाँ, बुरी आदतें (Bad habits)

अभ्यास

सोचिए और बताइए

1. मज़दूरों के जीवन में भी पाप क्यों दिखाई देता है ?
2. लेखक का अनुभव क्या कहता है ?
3. 'सिर्फ कर्म करने से कोई कर्मयोगी नहीं हो जाता' – लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?
4. अपने समाज में श्रम की प्रतिष्ठा क्यों नहीं है ?
5. काम न करने का एक प्रमुख कारण क्या है ?
6. लेखक पाठ के अंत में दो बातों पर बल देता है? वे दो बातें कौन-कौन सी हैं ?
7. रामायण की कहानी के संदर्भ से लेखक क्या बात समझाना चाह रहा है ?

आशय स्पष्ट कीजिए

(क) मेहतर माने तो-महत्तर।
(ख) जो व्यक्ति पसीने से रोटी कमाता है, वह धर्म-पुरुष हो जाता है।
(ग) अगर हम काम की इज्जत नहीं करते तो बड़ा भारी धर्म-कार्य खोते हैं।

पढ़िए, समझिए और लिखिए

श्रम	=	श्रमिक	परिश्रम	आश्रम
शरीर	=	.....	.....	.....
कर्म	=	.....	.....	.....
धर्म	=	.....	.....	.....

वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए

जो व्यक्ति श्रम करता है = श्रमिक

जो व्यक्ति मज़दूरी करता है = ...

जो व्यक्ति उपकार करता है = ...

जो व्यक्ति पाप करता है = ...

जिस व्यक्ति को ज्ञान है = ...

जो व्यक्ति कर्म करता है = ...

'इक' प्रत्यय का प्रयोग करके शब्द बनाइए

भूत + इक = भौतिक

धर्म + इक = ...

पुराण + इक = ...

संसार + इक = ...

नीति + इक = ...

लोक + इक = ...

उद्योग + इक = ...

शरीर + इक = ...

भाषा ज्ञान

कर्मयोगी = कर्म का योगी

धर्म-ग्रंथ = ...

कार्य-मुक्त = ...

पाप-कर्म = ...

कीजिए

- 'श्रम की महत्ता' पर एक लेख लिखिए।
- 'श्रम की प्रतिष्ठा' विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन कीजिए। सभी के मतों की समीक्षा कीजिए।
- मजदूरों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए उनकी बस्ती में जाकर उनके बार में जानकारी प्राप्त करें।